महामत कहे ए मोमिनों, हादिएं खोल दिए दिन बातन।
कयामत दिन जाहेर कर, देखाया अर्स बका वतन।। ४१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान के सब बातूनी भेद खोल दिए हैं और कयामत के निशान जाहिर कर सबको अखण्ड परमधाम दिखा दिया है।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ७९३ ।।

बाब हादी गिरोकी पेहेचान

भाई महंमद के मोमिन, कोई था न उस बखत।
तो सरा चल्या तोरे बल, कह्या हम फेर आवसी आखिरत।। १ ।।

रसूल साहब जब दुनियां में आए, तो उस समय उनके भाई (मोमिन) संसार में नहीं उतरे थे, इसलिए उन्होंने भविष्य में आने का वायदा किया और अपनी राज सत्ता के बल पर शरीयत का धर्म चलाया।

मोमिन का दुनी मजाजी, उठाए न सके भार।
मारे उसी सिर्क से, तो कहे बीच नार।। २ ।।

दुनियां के झूठे दिल वाले मोमिनों की साहेबी का भार नहीं उठा सकते। उन्होंने मोमिनों का झूठा दावा लिया, तो इस झूठे अहंकार के कारण नीचा देखना पड़ा, इसलिए उनकी नारी (दोजखी) फिरकों में गिनती की गई।

तब रसूल खोलत जो माएने, हकीकत मारफत।
तो तबहीं होती फजर, जाहेर होती कयामत।। ३ ।।

रसूल साहब यदि उसी समय हकीकत और मारफत का ज्ञान दे देते, तो उसी समय सवेरा हो जाता और कयामत हो जाती।

आए सदी बीच आखिरी, जो रसूलें करी थी सरत।
बखत हुआ बीच बारहीं, भई फरदा रोज कयामत।। ४ ।।

रसूल साहब ने जैसा वायदा किया था, उसी के अनुसार ग्यारहवीं सदी में आए। कल के दिन कयामत होगी, जो कहा था, वह बारहवीं सदी का समय आ गया।

ए इसरातें हक मुसाफ की, पाइए खुले हकीकत मारफत।
ए हक इलमें पाइए मेहेर से, जो होए मूल निसबत।। ५ ।।

हकीकत और मारफत का ज्ञान मिलने पर ही कुरान की यह इशारतें समझ में आती हैं। श्री राजजी महाराज की मेहर से ही यह कुलजम सरूप की वाणी मिलती है जिससे मूल सम्बन्ध का पता चलता है।

ए अर्स गुझ बिना लदुन्नी, क्यों कर बूझ्या जाए।
हक खिलवत बातें गैब की, दें अर्स दिल मोमिन बताए।। ६ ।।

यह परमधाम की गुझ (गुप्त) बातें हैं जो कुलजम सरूप की वाणी के बिना कैसे समझी जाएं? परमधाम में मूल-मिलावा की और श्री राजजी महाराज की गुझ (गुप्त) बातों को मोमिन ही बताएंगे, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज अर्श कर बैठे हैं।

Nijanand App

वाहेदत भी इनको कहे, जो हादी हक जात।
त्यों नूर हादी का उमत, इन बीच और न समात।।७।।

मोमिनों को ही श्री राजजी महाराज की एकदिली कहा है और इनको ही श्री राजश्यामाजी के अंग कहा है। श्री श्यामाजी की नूरी जमात में इनके अतिरिक्त और कोई नहीं आ सकता।

सुंनत जमात इन को कही, गिरो एक तन जुदी न होए।
ए हक इलमें बेसक हुए, याकी सरभर करें नारी सोए।।८।।

इनको ही सुन्नत जमात कहा है। यह सभी एकतन हैं। अलग नहीं हैं। कुलजम सरूप की वाणी से इनके संशय मिट गए हैं। अब सभी नारी फिरके मोमिनों का दावा लिए बैठे हैं।

वाहिद तन मोमिन कहे, एही जमात–सुंनत।
एही फिरका नाजी कह्या, इनों हक हिदायत।।९।।

मोमिनों को एक ही तन, एकदिल कहा है। यही सुन्नत जमात है। इनको ही मर्द मोमिनों का नाजी फिरका कहा है और श्री राजजी महाराज की वाणी भी इन्हीं के वास्ते है।

ए जो कौल तोड़ बहत्तर हुए, कहें हम सुंनत–जमात।
दिन मारफत हुए पछताएसी, सिर पटकें जिमी सों हाथ।।१०।।

इन वचनों को तोड़कर जो बहत्तर नारी फिरके हो गए हैं वह सब अपने को सुन्नत जमात कहते हैं। कुलजम सरूप की वाणी से जब उन्हें ज्ञान होगा तब वह पछताएंगे और अपने हाथों को माथे पर मारकर, सिर जमीन पर पटक-पटक कर रोएंगे।

मेहेरबान ना देवे दुख किन को, मारे सबों तकसीर।
क्या राए राने पातसाह, क्या मीर पीर फकीर।।११।।

श्री राजजी महाराज तो बड़े ही मेहरबान हैं। वह किसी को दुःख नहीं देते। सबको उनके गुनाह ही मारते हैं। चाहे कोई राजा, राणा, बादशाह हो या फिर मीर पीर-फकीर हो, सब गुनाहों की सजा पाते हैं।

सुंनत–जमात जात हक की, ए मुख से कहें हम सोए।
कह्या गुनाह बड़ा इन कौल का, तो कह्या जलना याको होए।।१२।।

यह सभी अपने मुख से खुदा की सुन्नत जमात (मोमिनों) का दावा लेते हैं। यह उनका सबसे बड़ा गुनाह होगा, जिसकी उनको जलन होगी।

कुंन केहेते जुलमत से, कहे पल में पैदा मोहोरे खेल।
सो सरभर करें हक जात की, तो लटकाए गले में जेल।।१३।।

जो सृष्टि कुंन शब्द कहने से निराकार से पैदा हुई है, ऐसे कई खेल एक पल में बनते-मिटते हैं, यह मोमिनों की बराबरी करते हैं, इसलिए इनके गले में फासी का फंदा लगा।

और गिरो महंमद मोमिनों, ए उन पर हुए मेहेरबान।
तो दोस्त कहे दुस्मनों, ए मोमिनों बड़ी पेहेचान।।१४।।

जो जमात श्री श्यामाजी महारानी के मोमिनों की है, वह फिर भी इस दुश्मन पर मेहरबानी करती हैं। यही मोमिनों की बड़ी पहचान है कि वह अपने दुश्मन का भी भला चाहते हैं।

Nijanand App

एही औलिया अंबिया, एही कहे हैयात।
दूजा हैयात जरा नहीं, बिना वाहेदत हक जात।। १५ ।।

इन मोमिनों को ही औलिया, अंबिया तथा अखण्ड परमधाम की आत्माएं कहा है। इनके अतिरिक्त दुनियां में और कोई अखण्ड नहीं है।

कोई कायम जरा दूजा कहे, सो मुसरक और काफर।
एक जरा कोई कहूं नहीं, वाहेदत हक बिगर।। १६ ।।

मोमिनों के बिना दुनियां में यदि किसी को कोई अखण्ड कहता है, तो वह काफिर है और बुत परस्त है। दुनियां में केवल मोमिनों के बिना कहीं कोई भी अखण्ड नहीं है।

जो पातसाही हक की, नूरतजल्ला नूर।
इन दोऊ अर्सों बका जिमी, सो सब वाहेदत नूर हजूर।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज की साहेबी परमधाम और अक्षरधाम में है। यह दोनों धाम अखण्ड हैं। श्री राजजी महाराज के नूर के ही स्वरूप हैं। दोनों धाम आमने-सामने श्री राजजी के चरणों तले हैं।

वाहेदत की रूहों वास्ते, खेल झूठा देखाया और।
सो रूहें वाहेदत भूल के, जाने झूठाई हमारा ठौर।। १८ ।।

इन रूहों की एकदिली के वास्ते ही यह झूठा खेल श्री राजजी महाराज ने दिखाया है। अब यह रूहें परमधाम को भूलकर इस झूठे संसार को ही अपना घर समझ बैठी हैं।

एही कबीला एही घर, एही पूजें पानी आग पत्थर।
जानें एही फना नासूत को, कछू नाहीं इन बिगर।। १९ ।।

मोमिन संसार को ही अपना घर और बिरादरी को ही अपना कबीला समझ बैठे हैं और आग, पानी और पत्थर को पूज रहे हैं। यह समझ बैठे हैं कि यह संसार ही सब कुछ है। इसके बिना और कुछ नहीं है।

आसमान जिमी बीच फना के, ए सब में सब्द पुकार।
फेर याही को दूजा कहें, जो हक इलमें न खबरदार।। २० ।।

आसमान, जमीन और चौदह लोक सब नाशवान हैं। यह सब धर्मग्रन्थों में कहा है। फिर इसी संसार को दूसरा कह देते हैं, क्योंकि किसी को कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान नहीं है, अर्थात् अखण्ड परमधाम के अतिरिक्त मिटने वाले ब्रह्माण्ड को दूसरा नहीं कह सकते।

मोमिन और दुनी के, एही तफावत।
मोमिन तन अर्स में, दुनी तन पेड़ गफलत।। २१ ।।

मोमिनों में और दुनियां वालों में यही बड़ा फर्क है। मोमिनों के मूल तन परमधाम में हैं और दुनियां के तन नाशवान हैं।

मोमिन सुरत पीछी फिरे, उठ खड़ा होए अर्स तन।
जो दुनियां दम पीछी फिरे, तो जाए ला-मकान बीच सुंन।। २२ ।।

मोमिनों की सुरता जब पीछे हटेगी तो परमधाम की परआतम उठ खड़ी होगी। दुनियां जल मरेगी तो निराकार और शून्य में समा जाएगी।

Nijanand App

एक तन मोमिन अर्स में, दूजा तन सुपन।
लैल फरामोसी बीच में, भूल गए अर्स तन।। २३ ।।

मोमिनों का मूल तन परमधाम में है और दूसरा तन संसार का है। यह फरामोशी के खेल में अपने असल तन परआतम को भूल गए हैं।

दे हक इलम जगाए मोमिनों, देखी अर्स बका न्यामत।
एक जरा छिपी ना रही, देखी अर्स हक खिलवत।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी से मोमिनों को जगाया। मोमिनों ने अखण्ड परमधाम की न्यामत को देखा। उन्होंने मूल-मिलावे को देखा। अब कोई बात उनसे छिपी नहीं रह गई।

सकसुभे कछू ना रही, पट बका दिए सब खोल।
दई साहेदी आयतों हदीसों, सो सब रूहअल्ला कहे बोल।। २५ ।।

मोमिनों को किसी प्रकार के संशय नहीं रहे। अखण्ड परमधाम के सब दरवाजे खुल गए। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुरान की साहेबी, मुहम्मद की हदीसों की और श्री श्यामाजी महारानी (देवचन्द्रजी) के वचनों की गवाही दी।

वजूद मोमिन जो ख्वाब के, सो किए रूबरू अंग असल।
खोले बातून देखे रूह नजरों, किए दोऊ मुकाबिल।। २६ ।।

मोमिनों के झूठे तन जो संसार में है, उनको उनकी परआतम के सामने कर दिया। उनके लिए सब ग्रन्थों के छिपे भेद खोल दिए। अब वह अपनी नजर से संसार और परमधाम को देख रहे हैं।

सेहेरग से नजीक कहे इनको, जाकी असल हक कदम।
जो हुआ असल पर हुकम, सोई नकल देत इत दम।। २७ ।।

मोमिनों से ही श्री राजजी महाराज सेहेरग से नजदीक हैं। इनकी परआतम श्री राजजी महाराज के चरणों के तले बैठी है। परआतम के अंग पर जो श्री राजजी महाराज का हुकम होता है, वैसा ही उनका संसार में यह नकली तन लीला करता है।

असल दुनी जिन गफलत, ताए इलमें करो पेहेचान।
ताको नजीक सेहेरग से, सुन्य हवा ला–मकान।। २८ ।।

दुनियां जो निराकार से पैदा है, उसे कुलजम सरूप की वाणी से पहचानो। दुनियां वालों का सेहेरग से नजदीक निराकार है।

नहीं करें बराबरी है की, क्यों मिले दाखला ताए।
है नींद उड़े उठे अर्स में, फना नींद उड़े उड़ जाए।। २९ ।।

मिटने वाली दुनियां सच्चे मोमिनों की बराबरी करती है। इनकी तुलना कैसे हो सकती है? संसार के समाप्त होने पर मोमिन परमधाम में अपनी परआतम में उठ खड़े होंगे तथा यह सपने की दुनियां जड़ (मूल) से ही समाप्त हो जाएगी।

सुपन उड़े जब मोमिनों, उठ बैठे अर्स वजूद।
खासलखास बंदे नजीकी, ए कदमों हमेसा मौजूद।। ३० ।।

मोमिनों का जब सपना हटेगा, तो परमधाम के तन उठ बैठेंगे। यह मोमिन श्री राजजी महाराज के अंग हैं और सदा श्री राजजी महाराज के चरणों के तले रहने वाले हैं।

Nijanand App

ए रूहें फरिस्ते दो गिरो, जो बीच उतरी लैलत कदर।
और दुनी फूंके उड़ावे असराफील, दूजी फूंके उठावे बका कर।। ३१ ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की दो जमातें लैल तुल कदर में उतरी हैं। जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील सूर फूंककर दुनियां को उड़ा देगा और दूसरी बार सूर फूंककर सबको अखण्ड बहिश्तों में कायमी दे देगा।

महंमद कहे भाई मेरे, आवेंगे आखिरत।
गिरो रबानी अहमदी, याकी बीच आयतों हदीसों सिफत।। ३२ ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मेरे भाई मोमिन आखिर को आएंगे। यह श्री श्यामाजी महारानी की जमात है, जिनकी महिमा कुरान की आयतों और मुहम्मद की हदीसों में गाई है।

खेल किया महंमद वास्ते, जैसे खेल के कबूतर।
खासलखास गिरो रबानी, वह इनों की करे बराबर।। ३३ ।।

यह खेल श्री श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते बनाया है। यह संसार खेल के कबूतर के समान नाशवान है। मोमिन श्री राजजी महाराज की खासलखास जमात हैं, जबकि दुनियां वाले इनकी बराबरी करते हैं।

खेल किया महंमद वास्ते, महंमद आया वास्ते उमत।
ताए एक दम न्यारी ना करें, मेहेर कर धरी तीन सूरत।। ३४ ।।

यह खेल श्री श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते बनाया। श्री प्राणनाथजी ने इन मोमिनों के वास्ते ही अपनी तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी धारण की हैं। इन मोमिनों को अपने से एक पल भी अलग नहीं करते हैं। श्री प्राणनाथजी इन्हीं के वास्ते आए हैं।

इन उमत भाइयों वास्ते, महंमद आए तीन बेर।
दुनी क्या जाने बिना निसबत, बिना इलम रात अंधेर।। ३५ ।।

इन मोमिन भाइयों के वास्ते मुहम्मद साहब ने तीन बार तन धारण किए (बसरी, मलकी और हकी)। इस बात को दुनियां वाले बिना सम्बन्ध के कैसे जान सकते हैं? उनके पास जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी नहीं है, इसलिए अंधेरे में भटक रहे हैं।

जब जोड़े मिले मुकाबिल, तब जाहेर हुए रात दिन।
रात कुफर फना मिट गई, हुआ हक बका अर्स रोसन।। ३६ ।।

जब हजार साल का दिन और हजार महीने की रात्रि दिन-रात का जोड़ा गुजरा, तब अज्ञान और अन्धकार मिट गया तथा श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की पहचान सबको मिली (१७४८ सम्वत् में)।

असल जाकी अर्स में, सो सेहेरग से नजीक होए।
जो पैदा तारीकी हवा से, क्यों हक नजीक आवे सोए।। ३७ ।।

जिनकी परआतम परमधाम में है, उनसे ही श्री राजजी महाराज सेहेरग से नजदीक हैं। दुनियां जो मोह तत्व (निराकार) से पैदा है वह श्री राजजी के नजदीक कैसे हो सकती है?

Nijanand App

सोई फना कही दुनियां, जाकी असल अर्स में नाहें।
सोई हैयात हमेसगी, जो अर्स बका माहें।। ३८ ।।

इसलिए दुनियां को नाशवान कहा है, क्योंकि इनकी परआतम परमधाम में नहीं है। जो अखण्ड परमधाम में हैं वह सदा ही अखण्ड हैं।

वे इंतजार उसी कौल के, ढूंढ़त फिरें रात दिन।
आराम न होए बिना मिले, जेती रूह मोमिन।। ३९ ।।

जितने रूह मोमिन हैं वह श्री राजजी महाराज के वायदे के अनुसार उनके आने का इन्तजार कर रहे हैं और रात-दिन श्री राजजी को खोज रहे हैं। जब तक श्री राजजी महाराज मिल नहीं जाते, तब तक उनको चैन नहीं है।

महंमद मोमिनों वास्ते, ले आया फुरमान।
इलम किल्ली ल्याए रूहअल्ला, किए छिपे जाहेर बयान।। ४० ।।

रसूल साहब मोमिनों के वास्ते ही कुरान लाए और तारतम ज्ञान की कुन्जी रूह अल्लाह श्री श्यामाजी लाए, जिन्होंने अपने दूसरे तन से कुरान के छिपे रहस्य जाहिर किए।

एते दिन किन ना कह्या, के रसूल आया इन पर।
ना किन फुरमान सिर लिया, ना किन लई खबर।। ४१ ।।

इतने दिन तक किसी ने नहीं कहा कि रसूल साहब मोमिनों के वास्ते आए हैं। किसी ने भी उनके फुरमान को स्वीकार नहीं किया। किसी ने रसूल साहब की दी खबर नहीं ली।

नब्बे साल हजार पर, जब लग बीते दिन।
एते दिन किन ना कह्या, जो कुरान न पकड़्या किन।। ४२ ।।

एक हजार नब्बे वर्ष बीतने तक किसी ने कुरान के ज्ञान को नहीं पकड़ा और न यह बात ही कही (सम्वत् १७३५ तक)।

बोहोतों किया कुरान अपना, ना किन लई हकीकत।
ना किन पाया इलम हक का, ना किन खोली मारफत।। ४३ ।।

सभी लोग कुरान को अपना कहते थे, परन्तु हकीकत का ज्ञान किसी ने नहीं लिया। किसी को कुलजम सरूप की वाणी नहीं मिली और न किसी ने मारफत का ज्ञान, श्री राजजी महाराज के दिल की हकीकत के भेद ही खोले।

जो रूहें उतरीं अर्स सें, तामें केते कहे पैगंमर।
सिरदार सबों में रूहअल्ला, कहें हदीसें यों कर।। ४४ ।।

परमधाम से जो रूहें उतरी हैं, इनमें बहुत परमधाम का ज्ञान बताने वाली हैं। हदीसों में लिखा है कि इन सब मोमिनों के सिरदार (प्रधान) रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी होंगे।

ए हुज्जत जाहेर किन ना करी, हम रूहें अर्स सें आई उतर।
कौल किया हकें हमसों, बोलावें बखत फजर।। ४५ ।।

किसी ने भी इस बात का दावा नहीं किया कि हम परमधाम की रूहें हैं और खेल देखने के लिए उतरी हैं। किसी ने यह भी नहीं कहा कि खुदा ने हमको फजर के वक्त बुलाने के वास्ते आने का वायदा किया है।

Nijanand App

कह्या रसूलें रूहअल्ला, माहें सिरदार सब रूहन।
मैं फुरमान ल्याया इनों पर, ए करसी साफ सबन।।४६।।

रसूल साहब ने कहा कि सभी रूहों में श्री श्यामाजी महारानीजी सिरदार हैं। मैं इनके वास्ते कुरान लाया हूं। यही सब के संशय मिटाएंगे।

मारें एही दज्जाल को, और एही करें एक दीन।
साफ करे सब दिलों को, हक पर देवे आकीन।।४७।।

यही श्री श्यामाजी महारानी दज्जाल को मारकर सब दुनियां वालों को एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में लाएंगी। सबके दिलों को जागृत बुद्धि के ज्ञान से संशय मिटाकर निर्मल करेंगी और पारब्रह्म के ऊपर यकीन दिलाकर एक पारब्रह्म का पूजक बनाएंगी।

एही खोले हकीकत मारफत, करे माएना जाहेर बातन।
करे अर्स बका हक जाहेर, एही फजर कही हक दिन।।४८।।

यह श्री श्यामाजी महारानी ही अपने दूसरे जामे से हकीकत और मारफत के ज्ञान से बातूनी और जाहिरी मायने बताएंगी तथा अखण्ड घर परमधाम और श्री राजजी महाराज को दुनियां में जाहिर करेंगी। यही समय फजर का दिन कहा है।

मेट दई रात अंधेरी, और अगले अमल सरे दीन।
हक बका अर्स चिन्हाए, ऐसे हक इलमें किए अमीन।।४९।।

श्री श्यामाजी महारानी ने अपने दूसरे जामे से दुनियां से अज्ञान मिटा दिया और कर्मकाण्ड पर चलने वाले सभी धर्मों को समाप्त कर दिया। अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की पहचान कराकर कुलजम सरूप की वाणी से सभी मोमिनों को धर्मनिष्ठ कर दिया।

हकें करी अर्समें रूहोंसों, पेहेलें रदबदल।
सो इलमें जगाए दिल अर्स कर, हकें दई कुल्ल अकल।।५०।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों से परमधाम में पहले वार्तालाप किया था। अब कुलजम सरूप की वाणी से जगाकर मोमिनों के दिल को अपना अर्श बनाया और अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया।

जल बिन जल जीव ना रहे, ना थल बिन जीव थल।
तो अर्स रूहें अर्स बिन क्यों रहें, जिनों हक बका अर्स असल।।५१।।

जल के जीव जल के बिना नहीं रहते, थल के जीव थल के बिना नहीं रहते, तो परमधाम की रूहें परमधाम के बिना कैसे रहें? इनका अखण्ड घर परमधाम है।

ढूंढ़ें अपने रसूल को, और अपना फुरमान।
और ढूंढ़ें हक इलम को, जासों बातून होए बयान।।५२।।

यह मोमिन अपने रसूल श्री प्राणनाथजी को और उनकी वाणी कुलजम सरूप को खोजते हैं, जिससे उन्हें उनके घर की बातूनी बातें मिल जाएं।

राह देखें रूहअल्लाह की, और ढूंढ़ें आखिरी इमाम।
हक हकीकत मारफत, चाहें फल कयामत तमाम।।५३।।

यह श्री श्यामाजी महारानी के आने का रास्ता देख रहे हैं और आखिरी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को खोजते हैं। वह श्री राजजी महाराज के हकीकत और मारफत के ज्ञान से कयामत के समय का तमाम लाभ (नफा) लेना चाहते हैं।

Nijanand App

फना बीच से निकस के, बीच आवें बका असल।
दुनी दुख छोड़ लें हक सुख, ए रूहें क्यों छोड़ें अपना फल।।५४।।

मोमिन झूठे संसार से निकलकर अखण्ड परमधाम में आएंगे। दुनियां वाले जब दुःख को छोड़कर अखण्ड बहिश्तों का सुख लेंगे तो यह रूह मोमिन कयामत के समय मिलने वाली साहेबी के फल को कैसे छोड़ दें?

दिल बका या फना दम, सब असल अपनी चाहे।
कोई दोजख कोई भिस्त में, या कोई अर्स बीच उठाए।।५५।।

अखण्ड घर के रहने वाले हों या झूठे संसार के, सबको अपना असली हक चाहिए, इसलिए कयामत के समय में किसी को दोजख, किसी को बहिश्त और किसी को परमधाम में उठने का लाभ मिलेगा।

ए जो फना मोहोरे खेल के, मैं मेरी कर खेलत।
याही को देखें सुनें, सुध ना बका वाहेदत।।५६।।

इस संसार के झूठे देवी-देवता अपनी मैखुदी के अहंकार में खुदा बनकर खेल रहे हैं। वह संसार की बातों को देखते और सुनते हैं। इनको भी अखण्ड घर परमधाम की सुध नहीं है।

रूहें गिरो तिनमें मिल गईं, हक बका न जानें तरफ।
चौदे तबक फना बीच, कोई कहे न बका एक हरफ।।५७।।

ऐसे झूठे संसार में ब्रह्मसृष्टि भी आकर मिल गई है। जहां पर अखण्ड घर की पहचान कराने वाला कोई नहीं है। चौदह लोकों के नाशवान संसार में अखण्ड परमधाम का कोई एक हरफ भी नहीं बोलता।

ना थे अव्वल ना होसी आखिर, ए जो बीच में देत देखाए।
सो भी कहे किताबें अबहीं, आखिर देसी उड़ाए।।५८।।

यह संसार न पहले था और न आखिर में रहेगा। बीच में अभी जो दिखाई दे रहा है, वह भी आखिरत के समय उड़ जाएगा। ऐसा सब धर्मशास्त्रों में लिखा है।

अव्वल आखिर नाबूद, बीच फरेब सो भी नाबूद।
सो बरकत महंमद मोमिनों, पाए कायम भिस्त वजूद।।५९।।

यह शुरू में भी नाशवान है और अन्त में भी नाशवान है। बीच में भी यह झूठा नाशवान है, परन्तु मोमिनों की और श्री प्राणनाथजी की कृपा से सबको बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति मिल जाएगी।

ओ उतरे कहे अर्स से, ए कुंन केहेते पैदास।
जाहेर देखी तफावत, ए आम वे खासलखास।।६०।।

परमधाम से जो रूहें उतरी हैं और दुनियां जो कुंन कहते पैदा हुई है, उनमें यह सबसे बड़ा फर्क है कि दुनियां वालों को आम खलक और मोमिनों को खासलखास कहा है।

असल तन इनों अर्स में, ठौर ठौर लिखी इसारत।
बीच जंजीरों मुसाफ की, करें आयतें इनों सिफत।।६१।।

मोमिनों की परआतम परमधाम में है। यह बात ठिकाने-ठिकाने पर कुरान में लिखी है और कुरान की जंजीरों और आयतों में इनकी बड़ी महिमा गाई है।

Nijanand App

तो जाहेर करी बीच लैल के, हक की गैब खिलवत।
फजर होसी इत थें, दिन याही हक मारफत।। ६२ ।।

इन्होंने ही रात्रि में संसार में आकर मूल-मिलावे के छिपे भेदों को जाहिर किया और इनके द्वारा ही श्री राजजी महाराज के दिल की बातें (मारफत का ज्ञान) सबको मिलेंगी और फजर होगी।

अव्वल फुरमाया रसूल को, कहो हरफ तीस हजार।
राह रात की चलाओ सरीयत, बका फजरें रखो करार।। ६३ ।।

मेयराजनामे में लिखा है कि रसूल साहब को तीस हजार हरफ शरीयत के जाहिर कर इस्लाम दीन की स्थापना करने का आदेश था और तीस हजार हरफ अखण्ड ज्ञान का अधिकार दिया गया था और तीस हजार को छिपाकर रखने का आदेश हुआ था।

राह रात की चलाओ सरीयत, ले तरीकत पोहोंचे हकीकत।
तब फजर दिल महंमदें, दिन होसी मारफत।। ६४ ।।

खुदा ने रसूल साहब को हुकम दिया था कि शरीयत से इस्लाम दीन का धर्म चलाओ और फिर तरीकत और हकीकत की पहचान कराओ, फिर फजर के समय इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के दिल से मारफत का ज्ञान जाहिर होगा।

सिपारे उनईस में, लिख्या रात हवा मजकूर।
सूरज महंमद दिल मारफत, उड़े रात हवा देख नूर।। ६५ ।।

कुरान के उन्नीसवें सिपारे में रात्रि (निराकार) के धर्मों की यह सब चर्चा है जो श्री प्राणनाथजी के दिल से मारफत का ज्ञान रूपी सूर्य जाहिर होने पर यह सब समाप्त हो जाएंगे।

अग्यारैं सदी जानें आरिफ, लिखी हदीसों बीच सरत।
इस राह पोहोंचावे हकीकत, होसी फजर दिन मारफत।। ६६ ।।

हदीसों में ग्यारहवीं सदी में मोमिनों के जाहिर होने की बात लिखी है। इस बात की जानकारी हकीकत के ज्ञान से मिलती है। मारफत का ज्ञान जाहिर होने पर ज्ञान का सवेरा हो जाएगा।

दुनी हजार साल हक दिन के, कही सौ साल एक रात।
बारैं फरदा रोज फजर, होंए जाहेर हादी हक जात।। ६७ ।।

दुनियां के हजार साल खुदा के एक दिन के बराबर हैं। सौ साल की एक रात बताई है। अब बारहवीं सदी में कल का दिन हो गया और श्री राजश्यामाजी और रूहें जाहिर हो गईं।

और पेहेले छिपे रखाए हक ने, ए जो हरफ तीस हजार।
सो दिल बीच रखे महंमदें, कह्या तुमहीं पर अखत्यार।। ६८ ।।

खुदा ने रसूल साहब को हकीकत के तीस हजार हरफ छिपाकर रखने को कहा था। इनको दिल में रखना। इन्हें खोलने का अधिकार तुमको देते हैं।

तीस हजार और गुझ कहे, ताकी आई न किन को बोए।
जबराईल से छिपाए, ए आखिर जाहेर किए सोए।। ६९ ।।

मारफत के जो तीस हजार हरफ गुझ (गुप्त) कहे हैं, उनकी किसी को सुगन्धि तक नहीं मिली। यहां तक कि जबराईल फरिश्ता भी नहीं जान सका। अब श्री प्राणनाथजी महाराज ने आकर उनको संसार में जाहिर किया (खिलवत, परिकरमा, सागर, सिनगार)।

Nijanand App

ए साहेदी नामें मेयराज में, बीच लिखे माएने बातन।
हक इसारतें रमूजें, सो बूझे हादी या मोमिन।।७०।।

मेयराजनामा में इसकी गवाही लिखी है जो बातूनी भेद समझने से पता लगता है। श्री राजजी महाराज की इन इशारतों को श्री श्यामाजी महारानी और मोमिन ही समझ पाते हैं।

हक इलम लदुन्नी जिन पे, सोई समझे हक रमूज।
जो तन खिलवत अर्स के, सोई जानें हक दिल गुझ।।७१।।

यह कुलजम सरूप की वाणी जिनके वास्ते आई है, वही श्री राजजी महाराज की इशारतों को समझते हैं। जिनके तन परमधाम में है, वही श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ (गुप्त) बातों को जानते हैं।

एही करें खिलवत जाहेर, दूर करें तारीकी रात।
क्यों फना रहे बका नजरों, ऊग्या सूर बका हक जात।।७२।।

यही मोमिन ही परमधाम की खिलवत (मूल-मिलावा) को जाहिर करेंगे और अज्ञान के अन्धकार को दूर करेंगे। नाशवान संसार का ज्ञान अखण्ड ज्ञान के सामने कैसे रह सकता है, जबकि अखण्ड परमधाम की जागृत बुद्धि के ज्ञान का कुलजम सरूप मारफत सागर के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है।

अर्स न्यामत जाहेर हुई, जोए कौसर अर्स हौज।
हक इलमें कछू ना छिपे, किया जाहेर फरदा रोज।।७३।।

कुलजम सरूप की वाणी से जमुनाजी, हौज कौसर तालाब और परमधाम की सभी न्यामतें जाहिर हो गई हैं। कल के दिन कयामत होने का जो भेद था, वह भी सब जाहिर हो गया। पारब्रह्म की वाणी के सामने कुछ छिपा नहीं रह सकता।

ए जो दुनी पैदा जुलमत, सो इनों की करे सरभर।
मजाजी क्यों होए सके, रूहें हक बराबर।।७४।।

झूठे संसार के लोग जो निराकार से पैदा हैं, वह इन मोमिनों की बराबरी करते हैं। झूठे संसार के लोग मोमिनों के बराबर कैसे हो सकते हैं?

ए जो मोमिन नूर बिलंद के, दिल जिनों अर्स हक।
सरभर इनों की दुनी करे, हुआ सिर गुनाह बुजरक।।७५।।

मोमिन परमधाम से उतरे हैं, जिनके दिलों में श्री राजजी महाराज का अर्श है। झूठे संसार के लोग इनकी बराबरी करते हैं। यह उनके सिर बड़ा गुनाह हुआ।

जब लिया बातून माएना, खोली रूह नजर।
तब हुआ अर्स दिल मोमिनों, जाहेर हुई फजर।।७६।।

जब मोमिनों ने आत्मदृष्टि से कुरान के बातूनी अर्थों को समझा, तभी मोमिनों का दिल अर्श बन गया और फजर का दिन जाहिर हो गया।

ए जो अमल चलते थे रात के, ले राह सरीयत।
सो हुए सब मनसूख, खोले हकीकत।।७७।।

यह अंधेरे में कर्मकाण्ड (शरीयत) पर आधारित पन्थ, पैंडे पर चलते थे। वह हकीकत तारतम ज्ञान आने से सब रद्द हो गए।

Nijanand App

कह्या फजर को होएसी, फरदा रोज आखिरत।
होसी खोले हकीकत, हक अर्स लज्जत।।७८ ।।

कुरान में लिखा है कि जब हकीकत के ज्ञान से कुरान के रहस्य खुलेंगे, तब श्री राजजी महाराज और परमधाम के सुख मिलेंगे। फर्दा रोज को जो खुदा के आने का वायदा था, अब मारफत सागर का ज्ञान आने से फजर हो गई और सबको उनका दर्शन हो रहा है।

सो आए जब इत दिन में, भया नूर रोसन।
सिफायत महंमद की, फजर पोहोंची तिन।।७९ ।।

हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज ने आकर मारफत का ज्ञान दिया, जिससे सारे संसार की अज्ञानता का अन्धकार मिटकर उजाला हो गया। जिनको कुलजम सरूप की वाणी की पहचान हो गई, उनके लिए सवेरा हो गया।

तो कह्या अमल रात का, सुध आप ना हक।
हुता न इलम लदुन्नी, जिनसे होइए बेसक।।८० ।।

कुरान में कहा है कि अज्ञानता के अन्धकार में कर्मकाण्ड (शरीयत) पर चलने वाले धर्मों को पारब्रह्म की सुध नहीं थी और न उनके पास जागृत बुद्धि का ज्ञान ही था, जिससे उनके संशय मिट सकते।

हक इलम से होत हैं, अर्स बका दीदार।
पट खोलत सब वार के, और नूर के पार।।८१ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से ही परमधाम के दर्शन होते हैं। इस वाणी से ही निराकार के पार, उस पार के भी पार अक्षरातीत के दर्शन होते हैं।

सुध होए हक कुदरत, और आप चिन्हार।
इलम लदुन्नी हक का, खोल देवे सब द्वार।।८२ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से ही श्री राजजी महाराज की कुदरत तथा अपने आप की पहचान होती है और सब बेहद के पट खुल जाते हैं।

कायम न्यामत हक की, न थी रात के माहें।
अमल दुनी में सरीयत, ए चल्या है तब ताहें।।८३ ।।

श्री राजजी महाराज की अखण्ड न्यामत कुलजम सरूप की वाणी कर्मकाण्ड (शरीयत) पर चलने वाले धर्मों में नहीं थी। अज्ञान के अन्धकार के कारण ही कर्मकाण्ड पर आधारित धर्म चले।

बुत पुजावते रात के, गई जड़ मेख तिन।
सो क्यों जाहेरी आगे चल सकें, हुए हक बका दिन रोसन।।८४ ।।

अन्धकार में जो मूर्तिपूजा करते थे, वह धर्न जड़ से ही समाप्त हो गए। जब श्री राजजी महाराज का अखण्ड परमधाम का ज्ञान जाहिर हुआ, तो उसके सामने संसार के झूठे लोग कैसे चल सकते हैं?

झण्डा खड़ा था दीन का, मक्के मदीने।
सो जमात ले सरीयतें, पकड़्या था अकीने।।८५ ।।

मक्का मदीने में जो ईमान का झण्डा खड़ा था, उसको मुसलमानों ने शरीयत पर यकीन लाकर पकड़ रखा था।

Nijanand App

हुकम किया था रसूल ने, जिन पड़ो जुदे तुम।
सो कौल तोड़ बहत्तर हुए, रात के मुस्लिम।। ८६ ।।

रसूल साहब ने मुसलमानों को हुकम दिया था कि तुम आपस में झगड़ना नहीं। उनके वचनों को तोड़कर अनजान मुसलमान बहत्तर फिरकों में बंट गए।

इन मजाजी–जमात ने, छोड़े हक हादी कदम।
सो टूक टूक जमात जुदी हुई, हाए हाए ऐसा किया जुलम।। ८७ ।।

मुसलमान रसूल साहब के बताए हक श्री राजजी महाराज, हादी रसूल साहब के चरणों को छोड़कर बहत्तर टुकड़ों में बंट गए। हाय! हाय! इतना भारी जुल्म का काम किया।

हाए हाए देख्या न हक हादी सामी, ना हदीसें कुरान।
तो आए लिखे नामें वसीयत, इत ना रह्या किन का ईमान।। ८८ ।।

हाय! हाय! उन्होंने न हक हादी का ध्यान किया और न कुरान या हदीसों को पढ़ा। इस तरह से सबका ईमान उठ गया, जिसकी वसीयतनामे में गवाही दी।

एक सात जने ईमानसों, मुए मुसलमान।
आए पोहोंच्या सोई बखत, जो कह्या था नुकसान।। ८९ ।।

कुरान में रसूल साहब ने कहा था, मुसलमानो! तुम्हारे नुकसान का वक्त आएगा। तुम्हारा ईमान गिर जाएगा। उनके बाद एक बार लोग मदीने में नमाज पढ़ रहे थे, तो खुदा ने मोहरों की बरसात की। केवल सात मुसलमानों को छोड़कर बाकी सब मोहरें उठाने भाग गये। जब मोहरें उठाने लगे, तो वह कोयला हो गए। दोनों तरफ से नुकसान हुआ।

और लिख्या जो पीछे रहे, तिन दिलों नहीं आकीन।
सो ए लिख्या सौं खाए के, अब लग था झण्डा दीन।। ९० ।।

कुरान में यह भी लिखा है कि जो पीछे रहे। उनके भी यकीन डोल गए। वसीयतनामे में कसम खाकर लिखा है कि अब दीन का झण्डा यहां से उठ गया।

जो कह्या था रसूल ने, सोई हुआ बखत।
आए लिखे नामें वसीयत, जाहेर करी कयामत।। ९१ ।।

रसूल साहब ने जो कहा था, वह वक्त आ गया। वसीयतनामों ने आकर कयामत को जाहिर कर दिया।

तो आए नामें वसीयत, जो पेहेले फुरमाए।
सो ए देखो बीच आयतों, दिलसों अर्थ लगाए।। ९२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि रसूल साहब ने जैसा पहले से फुरमाया था, उसी के अनुसार वसीयतनामे लिखकर आ गए हैं। अब कुरान की आयतों को दिल से विचार कर देखो।

ए जो मजाजी दुनियां, क्या करसी विचार।
तो क्यों देखे बिना मारफत, बीच राह अंधार।। ९३ ।।

यह झूठी दुनियां कैसे विचार कर सकती है? क्योंकि इनके पास कुलजम सरूप की वाणी न होने के कारण से अंधेरे में पड़ी हैं।

Nijanand App

जिनों मुसाफ लदुन्नी खोलिया, पाई हकीकत।
तब जानो फजर हुई, आए पोहोंची सरत।। ९४ ।।

जिन्होंने आकर कुलजम सरूप की वाणी से कुरान के छिपे रहस्य खोले, उन्हें कुरान की हकीकत का ज्ञान मिल गया और तभी जानो कि फजर का समय आ गया।

तुम जुदे जिन पड़ो, रहियो गिरोह साथ।
सो होएगा दोजखी, जो छोड़सी जमात।। ९५ ।।

रसूल साहब ने कहा था कि जमात का साथ छोड़कर तुम अलग मत होना। जो जमात छोड़ेगा वह दोजखी होगा।

सो तो जिद कर जुदे हुए, फिरके जो बहत्तर।
ताको नारी आयतों हदीसों, लिख्या है यों कर।। ९६ ।।

रसूल साहब की बातों को न मानकर आपस में लड़ झगड़कर मुसलमान बहत्तर फिरकों में बंट गए। आयतों हदीसों में इनको नारी (दोजखी) फिरका कहा है।

सो देवाई हादिएं साहेदी, पुकारे सिरदार।
फैल कहे तिनों मुख अपने, दुनी सब हुई ख्वार।। ९७ ।।

मक्का मदीने के काजी लोगों ने वसीयतनामा लिखकर इस बात की गवाही अपने मुख से दी है कि इस्लाम के मानने वालों ने कहा कि यहां इमाम के बिना लड़ाई-झगड़े से सबकी दुर्दशा हो गई है।

कह्या दुनी पढ़सी, आप दिल विचार।
चिट्ठी लेसी पीछली हाथ में, केहेसी फैल पुकार।। ९८ ।।

मुहम्मद साहब ने कहा कि बाद में सभी जब कुरान को पढ़ेंगे और दिल से विचार करेंगे। तब उनके कर्म स्वयं ही उन्हें दिखने लगेंगे और पश्चाताप करेंगे।

फिरका जो तेहेत्तरमां, कह्या नाजी हक इलम।
मोमिन दिलों पर लदुन्नी, लिख्या बिना कलम।। ९९ ।।

तिहत्तरवां फिरका नाजी फिरका होगा। जिसके पास जागृत बुद्धि का ज्ञान होगा। यही वह मोमिन हैं, जिनके दिलों पर खुदा ने बिना कलम के ज्ञान लिखा है।

तिन दिलों पर सूरज, ऊग्या मारफत।
जिनों पाई अर्स इलमें, हक की हिदायत।। १०० ।।

इन मोमिनों के दिलों में ही मारफत के ज्ञान का सूर्य है। इनको कुलजम सरूप की वाणी से श्री राजजी महाराज की पहचान मिली।

रूहें फरिस्ते अर्स के, सोई महंमद दीन।
तिनमें सकसुभे नहीं, नूर पूर आकीन।। १०१ ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अखण्ड परमधाम और अक्षरधाम की हैं। यही लोग श्री प्राणनाथजी के निजानन्द सम्प्रदाय के सुन्दरसाथ हैं। इन सुन्दरसाथ के अन्दर जरा भी संशय नहीं है। इनका यकीन और ज्ञान पक्का है।

Nijanand App

ए जो बेसक महंमदी, सुंनत जमात।
वाहिद तन कुल्ल मोमिन, छोड़ें न हाथों हाथ।। १०२ ।।

इन्हीं सुन्दरसाथ को ही कुरान में सुन्नत जमात कहा है। यह सभी मोमिन एकतन, एकदिल हैं और एक-दूसरे का साथ कभी नहीं छोड़ते।

वसीयत नामें आए के, इत करी पुकार।
राह बीच की छोड़ बहत्तर हुए, छूट गया करार।। १०३ ।।

वसीयतनामों के आने से हिन्द में शोर हो गया कि मुसलमान लड़-झगड़कर बहत्तर फिरकों में बंट गया है। उसका चैन खत्म हो गया है। वह अशान्त हो गया है।

नाजी फिरका हक इलमें, बेसक हुआ एक।
मारफत माएना मेयराज का, सब पाया विवेक।। १०४ ।।

अब कुलजम सरूप की वाणी से ही सुन्दरसाथ का नया फिरका हुआ जो निःसन्देह है। इसी को नाजी फिरका कहते हैं। मेयराजनामें में जो मारफत के तीस हजार हरफ जाहिर न करने के आदेश दिए, उसका विवरण अब सुन्दरसाथ ने पढ़ लिया।

वसीयत नामें में सखत, लिखे सौगन्द खाए।
सो कौन देखे नाजी बिना, दिल सों अर्थ लगाए।। १०५ ।।

इसलिए वसीयतनामे में सौगन्ध खाकर कठोर शब्द लिखे हैं। इन शब्दों को इस नाजी फिरके के बिना दिल से अर्थ लगाकर कौन समझेगा?

सो नूर झण्डा खड़ा कर, इत दिया देखाए।
सो ईमान बिना देखे नहीं, पीछे रोसी पछताए।। १०६ ।।

इसलिए पन्नाजी में नूरी झण्डा खड़ा करके ज्ञान का रास्ता दिखा दिया। जिनको ईमान नहीं है, उनको दिखाई नहीं देगा और वह पीछे रोएंगे।

सो नूर झण्डा खड़ा हुआ, बीच हिंदुस्तान।
जित जबराईल ले आइया, न्यामत चारों कुरान।। १०७ ।।

वही ईमान का नूरी झण्डा श्री प्राणनाथजी ने पन्ना में खड़ा किया। जहां पर जबराईल फरिश्ता कुरान की चारों न्यामतें (बरकत, शफकत, कुरान और नूरी झण्डा) ले आया।

जिमी आरब से ल्याइया, दुनियां की बरकत।
और न्यामत बड़ी ल्याया, फकीरों की सफकत।। १०८ ।।

अरब की जमीन से जबराईल फरिश्ता दुनियां की बरकत उठा लाया। सबसे बड़ी फकीरों की शफकत और दुआएं उठा लाया।

ए जो दुनियां बरकत, सो तो कह्या ईमान।
और फकीरों की सफकत, सो आखिर मेहेर मेहेरबान।। १०९ ।।

यह दुनियां की बरकत और फकीरों की शफकत और ईमान आखिर में मेहरबान श्री प्राणनाथजी के पास आ गए।

Nijanand App

उतथें उठाए जबराईल, ल्याया बीच हिंद।
गिरो सितारे महंमदी, कहे जो सूरज चंद।। ११० ।।

जबराईल फरिश्ता मक्का मदीने से उठाकर इन न्यामतों को पन्नाजी में ले आया। जहां पर सुन्दरसाथ सितारों के समान और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर चन्द्रमा के समान श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) और सूर्य के समान श्री इन्द्रावतीजी (मेहराज ठाकुर) दोनों एकतन में दर्शन दे रहे हैं।

चांद सूरज दोऊ हादी कहे, महंमदी सूरत।
कही गिरो सितारों की, खासलखास उमत।। १११ ।।

यह चन्द्रमा और सूर्य दोनों हादी मुहम्मद के मलकी और हकी स्वरूप हैं और सुन्दरसाथ की जमात सितारों के समान है।

सिपारे सत्ताइस में, जाहेर कह्या रोसन।
सो तुम देखो अर्स दिलमें, जाहेर हक हादी मोमिन।। ११२ ।।

कुरान के सत्ताइसवें सिपारे में यह बात जाहिरी लिखी है। इसलिए, हे मोमिनो! तुम अपने अर्श दिल में साक्षात् श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ के दर्शन करो।

कह्या बीच हिंद के, हक करसी हिसाब।
खासलखास उमत, सब लेसी सवाब।। ११३ ।।

कुरान में रसूल साहब ने कहा कि खुदा न्यायाधीश बनकर पन्नाजी में बैठकर हिसाब करेंगे और खासलखास उम्मत (सुन्दरसाथ) सब दुनियां को अखण्ड मुक्ति देने का सवाब लेंगे।

अव्वल कह्या रसूलें, कजा होसी इत।
दीदार तब तिन होएसी, खोलें हक मारफत।। ११४ ।।

सबसे पहले रसूल साहेब ने आकर कहा था कि पारब्रह्म यहां आकर सबका न्याय करेंगे, तब सब दुनियां को उनका दर्शन होगा और वह मारफत (परमधाम का ज्ञान) सब में जाहिर करेंगे।

सिपारे उनईस में, लिख्या सूरज मारफत।
सो दिल रोसन महंमद का, होसी खोलें हकीकत।। ११५ ।।

रसूल साहब ने पहले ही कहा था कि श्री प्राणनाथजी न्यायाधीश बनकर हिन्दुस्तान पन्नाजी में न्याय करेंगे। वह श्री राजजी महाराज के दिल के भेद (मारफत ज्ञान) खोलेंगे, तब दुनियां को उनका दर्शन होगा।

ज्यादा हुआ फुरमाए से, जो कौल किया अव्वल।
सो जोड़ देखो आयतों हदीसों, ले दिल अर्स अकल।। ११६ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो मूल-मिलावा में वायदे किए थे। रसूल साहब ने जो फुरमाया था उससे ज्यादा काम हुआ। अब कुरान की आयतों से और मुहम्मद साहब की हदीसों को अपने अर्श दिल से विचार करके देखो, तब समझ में आएगा।

और भी देखो साहेदी, ए जो लिखी आयत।
ए जो किस्से कुरान के, आयतें सूरत।। ११७ ।।

और भी गवाही कुरान की आयतों से मिलती है। कुरान में जो किस्से आयतों और सूरतों में लिखे हैं, वह सब भविष्य में होने वाली बातें हैं, जिनको लोग बीती बातें बताते हैं।

Nijanand App

और सुकन बोलों नहीं, बिना हक फुरमाए।
सोई देखेगा मोमिन, जो दिल अर्स केहेलाए।। ११८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं श्री राजजी महाराज की वाणी के बिना और कुछ नहीं कहूंगी। इनको वह मोमिन ही देख सकेंगे, जिनके दिल में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, देखो अपनी निसबत।
असल तन अर्समें, जो हक की गैब खिलवत।। ११९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अपनी मूल परआतम को देखो जो परमधाम के अन्दर मूल-मिलावा में बैठी है।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ९१२ ॥

बाब असराफील का

तो असराफीलें आखिर, कुरान को गाया।
ऐसा बड़ा काम तो किया, जो आखिर को आया।। १ ।।

कुरान में लिखे अनुसार असराफील फरिश्ता श्री प्राणनाथजी के अन्दर आया और उसने कुलजम सरूप की वाणी को आकर जाहिर किया, वह आखिरत के समय आया, इसलिए इतना बड़ा काम किया।

तो रसूल ने अव्वल, ऐसा फुरमाया।
सो अपनी सरत पर, फरिस्ता आखिरी आया।। २ ।।

रसूल साहब ने कुरान में पहले से ही यह लिखा था कि आखिर के समय असराफील फरिश्ता आएगा। उसी के अनुसार असराफील फरिश्ता अपने समय पर आया है।

लिख्या फलाने सिपारे, ऐसी खुस न कबूं आवाज।
ए फरिस्ता कबूं न आइया, ए जो आया आज।। ३ ।।

कुरान के तीसवें सिपारे में लिखा है कि ऐसी सुन्दर वाणी जो असराफील आकर कहेगा, किसी ने नहीं सुनी होगी, क्योंकि इससे पहले फरिश्ता कभी नहीं आया जो अब आया है।

जो कौल फुरमाया अव्वल, सो सब आए के किया।
सूर बजाए दिल साफ से, सुकन सिर लिया।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो वायदे किए और मुहम्मद साहब ने कुरान में लिखे वह असराफील फरिश्ते ने आकर सब पूरे किए। असराफील ने कुलजम सरूप की वाणी का सूर फूंका और सबके दिल के संशय मिटा दिए। इस तरह से अपने धनी के हुकम को पूरा किया।

मगज जो मुसाफ का, जाहेर किया छिपाया।
गाया खुस आवाज सों, कौल सिर चढ़ाया।। ५ ।।

कुरान के अन्दर जो रहस्य छिपे थे, वह सब जाहिर किए और बड़ी मधुर आवाज से श्री कुलजम सरूप की वाणी को गाया और अपने धनी के हुकम को पूरा किया।

लिख्या चारों पैगंमर, सरत अपनी आए।
तिनों भी सिर हुकम, ल्याए हैं बजाए।। ६ ।।

कुरान में लिखे अनुसार ईसा, मूसा, दाऊद और मुहम्मद चारों पैगम्बर अपने वायदे के अनुसार श्री प्राणनाथजी के अन्दर आ गए हैं। उन्होंने भी खुदा के हुकम को पूरा किया।

Nijanand App